श्रीरामचरितमानस

दोहा :

सीय बिआहबि राम गरब दूरि करि नृपन्ह के ।
जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे ॥
245॥

अर्थ : [उन्होंने कहा -] राजाओं के गर्व दूर करके (जो धनुष किसी से नहीं टूट सकेगा उसे तोड़कर) श्रीरामचन्द्र जी सीताजी को ब्याहेंगे। [रही युद्ध की बात, सो] महाराज दशरथ के रणमें बाँके पुत्रों को युद्ध में तो जीत ही कौन सकता है॥

जानि सुअवसरु सीय तब पठई जनक बोलाइ ।
चतुर सखीं सुंदर सकल सादर चलीं लवाइ ॥
246 ॥

अर्थ : तब सुअवसर जानकर जनकजी ने सीता जी को बुला भेजा। सब चतुर और सुंदर सखियाँ आदरपूर्वक उन्हें लिवा चलीं॥

एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय सम तूल ॥
247

अर्थ : इस प्रकार (का संयोग होने से) जब सुंदरता और सुखकी मूल लक्ष्मी उत्पन्न हो, तो भी कवि लोग उसे बहुत संकोच के साथ सीता जी के समान कहेंगे।

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner

दोहा :

गुरजन लाज समाजु बड़ देखि सीय सकुचानि ।
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुबीरहि उर आनि ॥

248 ॥

अर्थ : परन्तु गुरुजनों की लाज से तथा बहुत बड़े समाज को देखकर सीता जी सकुचा गयीं। वे श्रीरामचन्द्र जी को हृदय में लाकर सखियों की ओर देखने लगीं।

बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल ।
पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल ॥

249 ॥

अर्थ : भाटोंने श्रेष्ठ वचन कहा – हे पृथ्वी की पालना करने वाले सब राजागण। सुनिये। हम अपनी भुजा उठाकर जनकजी का बिशाल प्रण कहते हैं।

तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ ।
मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गुरुआइ ॥

250 ॥

अर्थ : वे मूर्ख राजा तमककर (किटकिटाकर) धनुष को पकड़ते हैं, परन्तु जब नहीं उठता तो लजाकर चले जाते हैं, मानों वीरों की भुजाओं का बल पाकर वह धनुष अधिक-अधिक भारी होता जाता है॥

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी-विभाग
डी.एल.के.बी.डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner